डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांकः 1 सितम्बर 2009 मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - सातवां | अंक-पाँचवा | सितम्बर-2009 | मासिक पत्रिका

5
सतगुरु प्रीतम प्यारा
(एक शब्द)

6
परमात्मा का दरवाजा
(सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से)
सन्तबानी आश्रम, अमेरिका

8
अमृत वेला
(परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा भजन पर बिठाने से पहले हिदायतें)

11
आदत
(गुरु नानकदेव जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
9 टी.के .डब्ल्यू राजस्थान

41
सवाल-जवाब
(परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)

43
प्रेम-विरह
(परम सन्त अजायब सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया । फोन - 9950 55 66 71
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-9928 92 53 04 **उप सम्पादिका** : नंदिनी
सहयोग : रेणु सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) (90)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

सतगुरु प्रीतम प्यारा

सतगुरु प्रीतम प्यारा, जी कोई आन के मिलावे, (2)

1. कोई आन मिलावे, मेरा प्रीतम प्यारा, (2)
हौं तिस पै आप बेचाई,
जी कोई आन के मिलावे.....

2. दर्शन हर देखन के तांई, (2)
हर देखन कै तांई,
जी कोई आन के मिलावे.....

3. कृपा करे तां सतगुरु मेले, (2)
हर हर नाम ध्याई,
जी कोई आन के मिलावे.....

4. जे सुख दे तां तुझे आराधी, (2)
दुख भी तुझे ध्याई,
जी कोई आन के मिलावे.....

5. जे भुख दे तां इत ही रज्जां, (2)
दुख विच सुख मनाई,
जी कोई आन के मिलावे.....

6. तन मन काट काट सब अरपी, (2)
विच अग्नि आप जलाई,
जी कोई आन के मिलावे.....

7. पखा फेरी पानी ढोवां, (2)
जो देवे सो खाई,
जी कोई आन के मिलावे.....

8. नानक गरीब ढह पया द्वारे, (2)
हर मेल लेहो वडयाई,
जी कोई आन के मिलावे.....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

परमात्मा का दरवाजा

सन्तबानी आश्रम, अमेरिका

मैं सबसे पहले परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जो कभी इंसान का चोला धारण करके इस संसार मंडल पर आया। यह शरीर जो आपके सामने बैठा है इसे प्यार का संदेश दिया। मैं दूसरी बार भी इस टूर पर अपना कोई मिशन लेकर नहीं आया, यह कृपाल का ही मिशन है। हम अंदर जाकर उससे मिलने की इच्छा प्रकट करें।

मैं जहां भी गया मुझे बहुत प्यार मिला। इस टूर में ज्यादा आत्माएं काल के जाल में से निकल रही हैं। प्रेमी लोग 'नामदान' में ज्यादा रूचि रख रहे हैं। मैं फिर से सन्तबानी आश्रम में आप लोगों से मिलकर बहुत खुश हूँ। मैं इस धरती को नमस्कार करता हूँ क्योंकि मेरे प्यारे कृपाल ने इस धरती पर अपने मुबारक चरण रखे थे।

इस टूर के दौरान रसल, जूडिथ प्रकिन्स मेरी बहुत मदद कर रहे हैं। ये दोनों बहुत मेहनत से सेवा कर रहे हैं, मैं इनकी सेवा का बहुत आभारी हूँ। कोलम्बिया में कैन्ट और डेवी ने भी बहुत मदद की है हम उनके भी आभारी हैं।

आप जानते हैं कि हम यहां किस मकसद के लिए इकट्ठे हुए हैं, हमने उस मकसद को आँखों के आगे रखना है। हमने यहां ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन करना है; आश्रम में अनुशासन बनाकर रखना है और ज्यादा से ज्यादा एकाग्र होना है।

आप जानते हैं कि सिमरन से मन और आत्मा एकाग्र होते हैं ध्यान से आत्मा ठहरती है, 'शब्द' इसे ऊपर खींचता है। मन को खाली न छोड़ें इसे सिमरन में लगाए रखें। मेहनत करने से ही हम कामयाब हो सकते हैं। अभ्यास में बैठना **परमात्मा के दरवाजे** पर

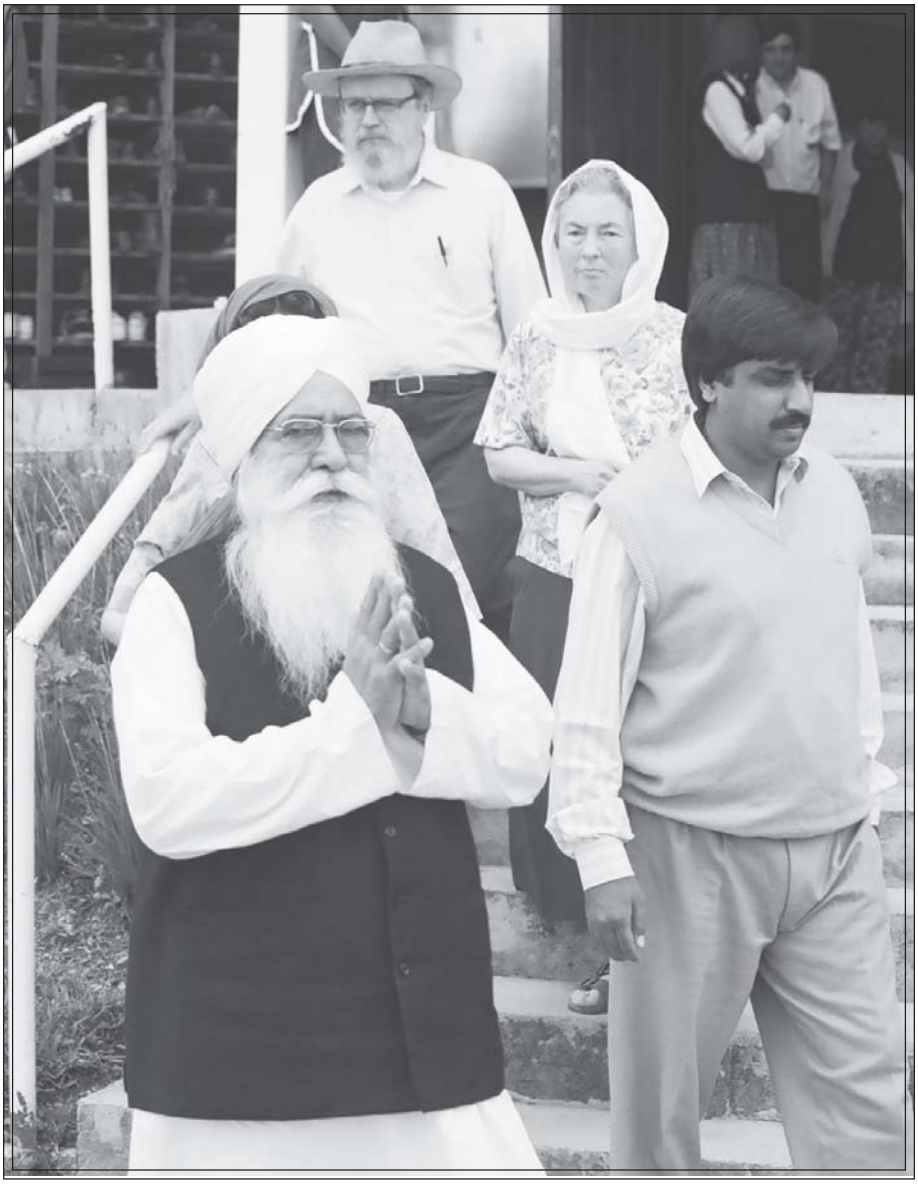

बैठना है अगर परमात्मा दरवाजा नहीं खोलता तो इसका मतलब यह है कि हम अभी तैयार नहीं। हमारा मन हमें बता भी देता है कि हम अभी तैयार नहीं हैं लेकिन हमने **परमात्मा के दरवाजे** पर बैठना है।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन पर बिठाने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

अमृत वेला

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका दिया है। प्यारेयो! हम उन महान सतगुरुओं की तारीफ कर ही नहीं सकते।

मैं बताया करता हूँ कि सन्तमत परियों की कहानी नहीं, यह सच पर आधारित है। कोई भी भक्ति करके देखे! आज तक जिसने भी इस शरीर लेबोट्ररी के अंदर जाकर इसका अध्ययन किया है वह इसे गलत नहीं कह सका। सन्त हमें उस मंजिल के बारे में बताते हैं जहाँ से वे आए हैं।

जब कोई आत्मा सन्तों की दया लेकर उनकी हिदायत के मुताबिक अंदर जाती है जोकि ऐसा देश है जिसे सन्त शान्ति का देश कहते हैं, वहां पहुँचकर जुबान चुप हो जाती है; आँखों को सन्तोष आ जाता है। वहां हर जगह परमात्मा ही नजर आता है। वहां हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, औरत-मर्द और पशु-पक्षी का भेद खत्म हो जाता है क्योंकि सबके अंदर मन मोहनी मूरत 'शब्द-रूप' होकर बैठी होती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

दूसर होय सो अवरो कहिए।

अगर परमात्मा के अलावा किसी और ने जीव को बनाया हो तो हम उससे द्वैत करें। यह कहना बहुत आसान है, जब हम वहां पहुँचते हैं तो हमारी सोच बदल जाती है। भीखन शाह कहते हैं:

कहे भीखन दोए नैन संतोखी, जह देखन तह सोई।

वहां पहुँचकर आँखों को सन्तोष आ जाता है फिर ये आँखें इधर-उधर की रंगीली चीजें देखना छोड़ देती हैं फिर ये आँखें जिसे भी देखती हैं उन्हें उसमें परमात्मा की मनमोहनी शक्ल नजर आती है।

हमारे ऊपर महान सतगुरुओं ने अपार दया की है। उन्होंने हम जीवों के खातिर ट्ट्टी-पेशाब का चोला धारण किया, दुनिया के ताने-मेहणे सहते हुए हम भूले हुए जीवों को हमारे घर का रास्ता बताया। हमें मालूम नहीं कि हम कितने युगों से अपने घर को भूले हुए थे। आप प्यार से कहते हैं:

भूले सिक्ख गुरु समझाए औजड़ जान्दे मार्ग पाए।

हम भूले हुए जीव कभी धूनिया तपाते कभी जलधारे करते कभी जंगलों-पहाड़ों में खोज करते तो कभी किसी के साथ बहस करते थे।

प्यारेयो! यह उन सतगुरुओं की दया और मेहरबानी थी कि उन्होंने हम जीवों के लिए अपने शरीर के ऊपर कष्ट सहन किए,

हमारे बीच रहकर छोटी सी जिंदगी व्यतीत की। परमात्मा इंसान की शक्ल में आकर हमारे बीच में रहता है। जब हम उनका रहन-सहन अपनी तरह देखते हैं तो हमें गलती लगती है।

एक पिता के दो बेटे होते हैं। एक बेटा पढ़-लिखकर डाक्टर या इंजीनियर बन जाता है और दूसरा घास ही खोदता रह जाता है। जिस तरह पानी और तेल का मेल नहीं होता उसी तरह गुरमुख और मनमुख का मेल नहीं हो सकता। हम सभी उस परमात्मा के बेटे हैं। एक इंसान परमात्मा बन जाता है और दूसरे में इंसान वाले गुण भी नहीं होते। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

करतूत पशु की मानस जात लोक विचारा करे दिन रात।

उन महान गुरुओं ने हम भूले हुए जीवों को रास्ता बताया। हम किस तरह उनकी महिमा कर सकते हैं? गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

कित मुख गुरु सलाहिए गुरु करण कारण समरथ।

आप कहते हैं कि हमारे पास ऐसी जुबान ही नहीं जिससे हम गुरु की तारीफ कर सकें। गुरु करण-कारण है, समरथ है। हम नहीं जानते कि उसने किस समय अपनी दृष्टि से हमारे खाली बर्तन भर देने हैं, सवाल हमारे बर्तन का है कि हमारा बर्तन कितना खाली है?

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''प्याला खाली हो तभी सुराही झुकेगी अगर प्याला पहले ही गिलाजत से भरा हुआ है तो सन्तों की दया कहाँ टिकेगी?''

प्यारेयो! सन्त-सतगुरु हमें आत्मा की सफाई के लिए सिमरन देते हैं जिस तरह हम मकान को झाड़ू के साथ साफ करते हैं उसी तरह सिमरन हमारी आत्मा को साफ करता है। हमने बहुत प्रेम-प्यार से सिमरन करना है। आँखें बन्द करके अपना सिमरन करें।

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आदत

गुरु नानकदेव जी की बानी

9 टी.के.डब्ल्यू, राजस्थान

उस करण-कारण परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों मे एक बार नहीं करोड़ों बार नमस्कार है। जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया अपना प्यार बख्शा और अपनी भक्ति का मौका दिया।

धुर कर्म पाया जिनके से नाम हरि के लागे।
कहे नानक तेह सुख होया तुध घर अनहद बाजे।

जब परमात्मा धुर दरगाह से हमारा फैसला कर लेता है कि मैंने इस आत्मा को भक्ति का मौका देना है इसे जन्म-मरण के कलेश से निकालना है तो वह अपनी दया जरूर करता है। परमात्मा ने आज तक कभी भी किसी के ऊपर सीधी दया नहीं की वह कोई न कोई जरिया बनाता है; परमात्मा अपने किसी न किसी प्यारे बच्चे को इस संसार में भेजता है।

आप लोग जानते हैं कि मैं इस इलाके में रहा हूँ। यहाँ पर बैठे हुए बहुत से मर्द, बीबियां मेरे साथ अभ्यास करते रहे हैं। मैं बहुत से लोगों के घर जाकर सतसंग के वचन भी सुनाता रहा हूँ। मुझे खुशी है कि परमात्मा ने मुझे बचपन से ही भक्ति की लगन बख्शी, यह उन्हीं की दया थी लेकिन मैं सदा अपनी जिंदगी में यही कहता रहा हूँः

मन चाहे जो करे पर जे लगया रहे।

मैं जितना भी समय इन प्रेमियों के बीच अभ्यास में बैठता रहा, इनके घरों में जाकर थोड़े बहुत वचन सुनाता रहा इनमें हरियावली रही, इनके चेहरों पर दमक थी। जिन्हें भजन करने की **आदत** है उनके चेहरे पर हमेशा दमक और खुशी रहती है। अब बहुत से प्रेमी मुझे 16 पी.एस. आकर कहते हैं कि हमारा कुछ नहीं बना।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है वही काम दूसरा आदमी भी कर सकता है। हमारे अंदर लगन नहीं इसलिए हम अभ्यास छोड़ देते हैं।''

मुझे संसार में जाने का मौका मिला। मैं सदा ही बताया करता हूँ कि मुझे महान हस्तियों के बीच बैठकर जो प्यार मिला है मैं संसार में वही प्यार बाँटने के लिए आया हूँ। आज तक कोई भी सन्त समाज बनाने के लिए नहीं आया न ही किसी सन्त के दिल में यह होता है कि मेरे ज्यादा शिष्य हों या उन्होंने कोई फौज खड़ी करनी होती है। उनकी खोज सिर्फ सच्चे जिज्ञासुओं के लिए होती है कि किसके दिल में तड़प है कौन परमात्मा से मिलना चाहता है?

यह एक सच्चाई है कि सन्त अपने गुणों का प्रदर्शन तो नहीं करते लेकिन वे अंर्तयामी होते हैं, दिलों की जानते हैं। महाराज जी कहा करते थे, ''जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा है वह जानता है कि नीचे क्या हो रहा है।'' मालिक के प्यारे महात्मा सच्चखंड पहुँचे होते हैं वे जानते हैं कि किसके दिल में तड़प है?

महाराज सावन सिंह जी ने बाईस साल खोज की। आप अपने सतसंगों में बताया करते थे अगर कोई किसी जमींदार के खेत में मजदूरी करने जाता है तो जमींदार को उसकी मजदूरी का फिक्र होता है, वह उसकी मजदूरी दे देता है तो क्या भगवान बेइंसाफ है?

आप पहले बाबा जयमल सिंह जी से नहीं मिले थे। बाबा जयमल सिंह जी पाँच-छह सौ किलोमीटर का रास्ता तय करके कोहमरी गए। महाराज सावन सिंह जी सतसंग में बताया करते थे कि मैं कोहमरी में एस.डी.ओ. लगा हुआ था और सड़क की देखभाल करवा रहा था। जब बाबा जी और उनकी सेवादार बीबी रूक्को मेरे पास से गुजरे तो बाबा जी ने मेरी तरफ इशारा करके कहा, ''हम इस सरदार की

खातिर यहाँ आए हैं।'' बीबी रूक्को ने कहा, ''इन्होंने तो आपको सतश्रीअकाल भी नहीं बुलाई।'' बाबा जयमल सिंह जी ने कहा कि यह आज से चार दिन के अंदर हमारे सतसंग में आ जाएगा।

महाराज सावन सिंह जी के एक दोस्त ने बताया कि पंजाब से एक महात्मा आए हैं, बहुत पहुँचे हुए सन्त हैं गुरुबानी पर सतसंग करते हैं। वहाँ एक सन्यासी साधु भी खड़ा था उसने कहा कि आप वहाँ न जाएं वे लोग नास्तिक हैं परमात्मा को नहीं मानते। बन्दे के सिर पर बाजा रखकर अंदर से आवाज पैदा करते हैं। महाराज सावन ने कहा, ''मैं एक इजींनियर हूँ मैंने ऐसा कोई बाजा नहीं देखा जो बन्दे के सिर पर रख दें तो अंदर से आवाज आए।''

महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह जी के पास जाकर सतसंग सुना तो कहा कि बाईस साल के शक-शकूक एक-एक करके दूर हो गए फिर बाबा जयमल सिंह जी से विनती की, ''बाबा जी! मुझे नाम दें।'' यह मन काल का एजेन्ट है यह कभी भी कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता। मन ने रुकावट डाली कि 'नाम' तो दें लेकिन 'राधास्वामी नाम' न दें। उस समय आम लोग राधास्वामी नाम से नफरत करते थे। बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''तू यह पोथी पढ़कर देख इसमे राधास्वामी का क्या मतलब है?'' आपने पोथी में पढ़ा,

राधा आदि सुरत का नाम स्वामी शब्द बसे निजधाम।
सुरत शब्द दोए राधास्वामी दोने नाम एक कर जानी।

आत्मा को राधा और 'शब्द' परमात्मा को स्वामी कहा गया है। स्वामी-स्वामी तो सभी सन्तों ने कहा है। तुलसी साहब भी कहते हैं:

सबके आदि कहूँ मैं स्वामी।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ऊँच अपार बेअन्त स्वामी कौन जाने गुण तेरे।

हे परमात्मा! तू सबसे ऊँचा है सच्चखंड में बैठा है। कौन तेरे गुण गा सकता है? स्वामी जी ने आत्मा को राधा कहकर परमात्मा के साथ जोड़ दिया तो क्या फर्क पड़ गया? अनेकों ही महात्मा आए हैं और अनेकों ने ही आना है। महात्मा अपने-अपने प्यार में परमात्मा को कई नामों से याद करते हैं। बाबा जयमल सिंह जी ने पूछा, ''क्या तू कोई नित्य-नियम करता है?'' महाराज सावन ने कहा, ''मैं गुरुबानी और जाप साहब पढ़ता हूँ।'' जयमल सिंह जी ने कहा, ''गुरु गोविंद सिंह जी ने जाप साहब में कितने नाम उचारे हैं?'' महाराज सावन ने कहा, ''पूरी तरह तो याद नहीं लेकिन चौदह-पन्द्रह सौ नाम हैं।'' जयमल सिंह जी ने कहा, ''जब तुझे चौदह-पन्द्रह सौ नामों पर कोई ऐतराज नहीं तो इस एक राधास्वामी नाम पर ऐतराज क्यों है?''

मैं बताया करता हूँ कि गुरु ही शिष्य की खोज करता है। इसी तरह महाराज कृपाल सिंह जी को महाराज सावन अंदर ही दर्शन देने लगे जबकि मिलाप तो सात साल बाद हुआ। महाराज कृपाल सिंह जी को दरियाओं की सैर करने का बहुत शौक था। आपने बहुत सी दरियाओं की सैर की। एक बार दिल में ख्याल आया कि ब्यास दरिया की भी सैर करके आएं!

आप लाहौर से ब्यास दरिया की सैर करने के लिए आए। आपने ट्रेन से उतरकर पूछा कि दरिया को कौन सा रास्ता जाता है? वहाँ का स्टेशन मास्टर गोआदास महाराज सावन का नामलेवा था उसने कहा, ''क्या आप सन्तों से मिलने आए है?'' कृपाल सिंह जी ने पूछा, ''क्या यहाँ सन्त भी रहते हैं?'' गोआदास ने ऊँची जगह पर खड़े होकर बताया कि वह सन्तों का डेरा है। कृपाल सिंह जी के दिल में ख्याल आया कि सन्तों से भी मिल लेंगे और दरिया की सैर भी हो जाएगी।

जब आप दोपहर को महाराज सावन सिंह जी से मिले तो आपने देखा कि यह तो वही बुजुर्ग है जो सात साल से मेरे अंदर आ रहा है।

आपने पूछा, ''महाराज जी! इतना बिछोड़ा क्यों रखा?'' महाराज सावन ने कहा, ''यह वक्त परमात्मा की तरफ से ही मुकर्र होता है।''

मैं यहाँ खूनी चक में बचपन से ही महाराज कृपाल को याद करता रहा। जब मुझे महाराज सावन मिले तो उन्होंने मुझसे कहा, ''तुझे अभी 'नाम' नहीं मिलेगा। तुझे 'नाम' देने वाला तेरे घर आकर ही रूहानियत की दौलत देगा।'' मैं उसके बाद मस्ताना जी और भी बहुत से सन्तों के पास गया; मेरा सबके साथ प्यार रहा है। मैंने आज तक किसी की निन्दा नहीं की और न ही निन्दा में यकीन रखता हूँ।

मैंने हर महात्मा के साथ सच्चे दिल से प्यार किया और आज भी मेरे दिल में वही प्यार है क्योंकि सभी सन्त एक होते हैं। सन्त हमें मजहबी जनून और मीठी तपेदिक से आजाद करने के लिए आते हैं लेकिन हम भूले जीव सन्तों से 'नाम' लेकर वहीं फिरका बनाकर उसमें कैद हो जाते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''हमने परमात्मा की भक्ति करनी है। सौ साधु एक छोटे से मकान में बैठकर भजन कर सकते हैं लेकिन एक गाँव में दो सांड नहीं रह सकते। हम तंगदिल वालों और भजन न करने वालों की यही हालत है।''

मैंने मस्ताना जी से कहा, ''महाराज जी! क्या आप वही हैं जो मेरे घर चलकर मुझे नामदान देंगे?'' मस्ताना जी ने कहा, ''वह खुद तेरे घर चलकर आएगा। मुझ पर सावन शाह की बख्शीश है। सावन शाह खुदा है और वह खुदा का बेटा है। वह इतनी कमाई वाला है अगर वह चलती हुई तोपों के आगे हाथ खड़ा कर दे तो चलती हुई तोपें रूक जाएं।'' महाराज कृपाल पाँच सौ किलोमीटर चलकर मेरे पास आए। उन्होंने अपनी दया-मेहर की अपने सेवक भेजे कि आज घर पर ही रहें। इससे पहले मैंने न कोई महाराज कृपाल की निन्दा करने वाला सुना था न ही कोई उनकी बड़ाई करने वाला सुना था।

यहाँ खूनी चक में बहुत से आदमी मकान बनवाने में मेरी सहायता करते रहे हैं। मैं कहा करता था कि यहाँ महाराज जी आएगें। हम यहाँ मकान बनाने के लिए रात को गैस जलाकर काम करते और दिन में भी काम करते थे। जब मकान बना तो महाराज जी आ गए। मैंने16 पी.एस. से सरदार रतन सिंह, अजीत सिंह, निर्मल सिंह को बुलवाया क्योंकि ये मुझे ज्यादा सहयोग देते थे और भी कई प्रेमियों ने आकर इंतजाम किया कि यहाँ महाराज जी आएंगे।

दयालु गुरु जिसका इकरार था वह आ गया। मैंने महाराज जी को प्यार से कहा, ''मेरा दिल-दिमाग बचपन से खाली है। मैं नहीं जानता कि मुझे आपसे क्या सवाल करना है?'' महाराज जी ने कहा, ''मेरे पास दिमागी कुश्तियां करने वाले बहुत हैं, मैं खाली जगह देखकर ही आया हूँ।'' महाराज कृपाल ने मेरा मकान और जायदाद देखी। आपने मकान की छत पर चढ़कर कहा, ''मुझे सब कुछ अच्छा लगा है मैं खुश हूँ। तू इस जगह को छोड़ दे, तूने यहाँ से कुछ नहीं उठाना। जानवर प्रेमियों की लड़कियों को दे दे और 16 पी.एस. जाकर भक्ति कर; मैं तुझे खुद ही मिलने आया करूंगा।''

अगर हमें सन्तों की बात समझ आ जाए तो सब कुछ ही बन जाता है भजन-अभ्यास भी उसी में आ जाता है। एक दिन आप मौज में आकर बख्शीश करने लगे कि इसमें से महक आएगी और वह महक सात समुद्र पार कर जाएगी। अमेरिकन लोग इसे हवाई जहाजों में सैर करवाएंगे। उस समय बहुत से प्रेमी बैठे थे जिनमें से एक प्रेमी ने कहा कि इन्हें कोई जीप पर तो चढ़ाता नहीं। एक और प्रेमी ने कहा कि महाराज कृपाल को काम लेने का बहुत अच्छा तरीका आता है। यह सब अपनी-अपनी भावना है। आज जब सबके सामने वह चीज जाहिर हुई तो अब हर बन्दा उस समय के बारे में सोचता है।

महाराज कृपाल ने पच्चीस साल होका दिया कि देने वाले का कसूर नहीं सवाल लेने वाले का है। महाराज सावन ने पैन्तालिस साल दोनो हाथों से होका दिया कि देने वाले का क्या कसूर है मसला तो लेने वाले का है। जिसने जैसा-जैसा बर्तन बनाया वह उसमें वैसी-वैसी वस्तु डाल गए लेकिन हम लोग उनसे क्या चीजें माँगते हैं? जिस दुकान पर हीरे हैं अगर हम उस दुकान पर जाकर कोयला माँगे तो वह कहाँ से देगा? अगर हम कोयले की दुकान पर जाकर हीरे माँगे तो वह हीरे कहाँ से देगा?

सन्त हमें इस दुनिया से निकालने के लिए और मीठी तपेदिक से बचाने के लिए आते हैं लेकिन हम उनसे संसार की चीजे माँगते हैं। हमें वे चीजें मिल जाती हैं फिर उन चीजों से दुख पैदा हो जाते हैं।

बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुखां दे दुख।
दे नाम सन्तोखिया ते उतरे मन की भुख।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपने अपने घर में अलमारी या और कोई चीज बनवानी है तो आप बार-बार मिस्त्री को बुलाएंगे अगर मिस्त्री से प्यार करके उसे अपने घर में ही रख लें वह आपकी जरूरत के मुताबिक अपने आप ही बनाता रहेगा।''

मैंने एक बार यहाँ चौदह-पन्द्रह किल्ले जमीन पर बिना पानी के कपास बीज दी वह कपास तीन साल तक हुई। इतना फल लगा कि देखने वाले हैरान होते थे। यह संगत के कर्म, संगत की किस्मत थी। राम सिंह एस.सी. ने आकर कहा, ''आप कहते हैं कि हमारे गाँव में पानी नहीं आया तो यह कपास कैसे हो गई?'' एक बन्दे ने कहा कि आपको पता है यहाँ कितनों की किस्मत है?

भक्ति करे पाताल में प्रकट होए आकाश।

आप भक्ति करें। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

आठ पहर जो हरि हरि जपे, हरि का भक्त प्रकट नहीं छिपे।

सूरज चढ़ता है अगर आप सोचें कि उसे पर्दे से ढ़क लेंगे तो क्या वह ढ़का जा सकता है? हमें भक्ति करनी चाहिए।

आपके आगे गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है गौर से बैठकर इस शब्द को सुनें और प्यार से समझें कि हम यहाँ क्यों बैठे हैं, क्यों आए हैं?

असुर संघारण राम हमारा।। घट घट रमईआ राम प्यारा।।

दुनिया में दो ताकतें काम करती हैं एक काल मत है और दूसरी दयाल मत है। हिन्दु एक को मनमत और दूसरी को गुरुमत कहते हैं। मुसलमान एक को शैतानी और दूसरी को रहमानी कहते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हमारा राम चौथे पद में बैठा है। हम दुनिया के सारे ही जीव राम-राम करते हैं।'' पहले मैं भी हे राम! हे गोविंद! का जाप किया करता था। मेरे अंदर इस जाप की **आदत** बनी हुई थी यह जाप अपने आप ही चलता रहता था। किसी ने मुझे बताया कि राम-राम करते हुए आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाएं जिससे पुण्य होगा। मैंने ऐसी क्रिया भी बहुत लगन से की है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

राम राम सबको कहे कहयां राम न होय।
गुर परसादी राम मन बसे तां फल पाए कोय।

अगर हम सारा दिन मिश्री-मिश्री करते रहें लेकिन मिश्री न खाएं तो मुँह मीठा नहीं होता। हम सारे ही राम-राम करते हैं कहने से राम नहीं मिलता। पहले आप अपना बर्तन बनाएं फिर किसी महात्मा से मिलें वह कृपा करे तब आप उससे अपने बर्तन में वस्तु डलवा सकते हैं। तुलसी दास कहते हैं कि चोर, ठग और साधु भी राम-राम करते हैं लेकिन बिना प्यार के वह राम रीझता नहीं, मिलता नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

एक राम दशरथ का बेटा एक राम घट घट में बैठा।
एक राम का सगल पसारा एक राम है इनसे न्यारा।

एक राम रामचन्द्र जी महाराज हुए हैं जो त्रेता युग में आए। आपने हिन्दुस्तान में अच्छा शासन किया है, आप बड़े न्यायकारी थे। हम उनके रामराज्य को आज भी याद करते हैं। आज भी कई नेता विश्वास दिलवाते हैं कि हम रामराज्य लाएंगे। रामराज्य में हर आदमी अपनी फरियाद खुले दिल से करता था। आपकी हिस्ट्री में आता है कि आप ब्रह्म के अवतार थे, आप कुत्ते तक की भी फरियाद सुनते थे।

भागवत में कथा आती है कि एक कुत्ते को किसी ने डंडा मारा। कुत्ते ने अपनी पूँछ से रस्सी को हिलाया। रामचन्द्र जी महाराज ने बाहर आकर पूछा, ''गण्डक! तुझे क्या कष्ट है?'' कुत्ते ने कहा कि मैंने इस आदमी का कुछ नहीं बिगाड़ा इसने मुझे डंडा मारा है। रामचन्द्र जी ने कुत्ते से पूछा, ''इसे क्या सजा दें?'' उस कुत्ते ने कहा कि आप इसे पुजारी बना दे ताकि यह भी लोगों का खाकर मेरी योनि में आ जाए। मुझे आपके चरणों में खड़े होकर यह ज्ञान है कि मैं पिछले जन्म में पुजारी था, मुझे लोगों का खाने की **आदत** पड़ी हुई थी। मैं इसे देखकर इसलिए उठा था कि यह मुझे खाने के लिए कुछ देगा क्योंकि **आदत** साथ ही जाती है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप जिसका खाते हैं उसका उतना काम कर दें।'' कबीर साहब कहते हैंः

गृही का टुक्कर बुरा नौं नौं उंगल दाँत।
भजन करे तो उबरे नहीं तो कढ़े आँत।

किसी का खा लेना तो बहुत आसान है लेकिन कर्ज कौन चुकाएगा? गुरु अमरदेव जी कहते हैंः

जोगी होय जग भवे घर घर भिखया ले।
दरगाह लेखा मंगिए किस किस उत्तर दे।

एक राम रामचन्द्र जी हुए हैं। एक राम सबके अंदर हर घट में बैठा हुआ है वह राम मन है। यह मन अब यहाँ है थोड़ी देर में अमेरिका फिर हिन्दुस्तान में आ जाएगा अगर आप सो भी रहे हैं तो भी आपका मन शान्त नहीं। सोते हुए स्वप्न ले आएगा जागते हुए, कारोबार करते हुए यह आपके अंदर अपना ताना-बाना बुनता रहेगा।

एक राम ने यह दुनिया पैदा की है वह राम त्रिलोकी का मालिक है। एक राम सच्चखंड में बैठा है। सन्तों का राम चौथे पद वाला है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हमारा राम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के राक्षसों को मारता है।

उनते राखे बाप न माई उनते राखे बहन न भाई।
दरब सिआणप न ओह रहते साध संग ओह दुष्ट वस होते।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमें इन पाँचों राक्षसों से माता, पिता, भाई, बहन भी नहीं बचा सकते क्योंकि ये राक्षस उनको भी चिपटे हुए हैं। हमारा धन-दौलत भी हमें इन राक्षसों से नहीं बचा सकता है। हम पूरे सतगुरु के चरणों में जाकर साधना करके ही इन दुष्टों से बच सकते हैं। हमारा राम इन असुरों को मारता है।''

नाले अलख न लखीऐ मूले गुरमुख लिख वीचारा हे।।

आमतौर पर हम कहते हैं कि वह अलख है। कमाई वाले सन्तों का अनुभव खुल जाता है वे हमें जुबानी जमा खर्च करना नहीं बताते। वे कहते है कि आप सच्चाई को खुद अपनी आँखों से देखें।

एक आदमी ने भौगोलिक विद्या पढ़ी है वह हर शहर हर बंदरगाह को अंगुली के इशारे से ही बता देगा कि यह जगह यहाँ है, दूसरे आदमी ने खुद जाकर सारे संसार की जगह देखी हैं उनमें से सच्चा कौन है? जिसने आँखों से देखा है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सन्तन की सुन साची साखी जो बोलण सो पेखण आखी।

सन्त अपना जातिय तर्जुबा बयान करते हैं। उन्होंने जो कुछ अपनी जिंदगी में अपने गुरु की दया से प्राप्त किया होता है वे वही संगत में बताते हैं अगर आप भी इस तरह करेंगे तो इनसे बच जाएंगे। वह अलख नहीं लखा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है।

गुरमुख साधु सरण तुमारी।। कर किरपा प्रभ पार उतारी।।

जो सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण से ऊपर चला जाता है वही गुरुमुख बनता है। वह उस परमात्मा को लखता है। परमात्मा को देखता है और परमात्मा से बातें करता है। आप प्यार से कहते हैं, ''हे परमात्मा! हम तेरे साधु की शरण में आ गए हैं। तू दया-मेहर करके हमारा पार उतारा कर दे।''

अगन पाणी सागर अति गहरा गुर सतगुर पार उतारा हे।।

आप कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी या किसी भी परम सन्त की बानी पढ़ लें। सन्तों ने बानियां इसलिए नहीं लिखी कि आप ठेके पर भोग लगवाकर मुक्त हो जाएंगे।

पढ़या इल्म अमल न कीता पढ़या फेर पढ़ाया की।
आदत खोटी न गँवाई मत्था फेर घिसाया की।

अगर इल्म पढ़कर उस पर अमल नहीं किया तो उसे पढ़ने का क्या फायदा? फिर भी शराब-कबाब की **आदत** नहीं छोड़ते तो गुरुद्वारे में माथा टेकना किस तरह परवान हो जाएगा? कबीर साहब कहते हैः

दिन को रोजा रखत है रात हनत है गाय।
ओह खून ओह बंदगी क्यों खुश होय खुदाय।

एक तरफ हम किसी जीव की जान लेते हैं, दूसरी तरफ रोजे रखते हैं, गुरुद्वारो में जाकर माथा टेकते हैं। परमात्मा कत्ल देखेगा या हमारी बंदगी की तरफ ध्यान देगा? किसी भी सन्त ने अपनी बानी में यह नहीं लिखा कि आप मीट खाएं, किसी की जान लें।

तुलसी साहब ने गुरु नानकदेव जी की तारीफ की है कि आप सूरमा थे आपने गुरुग्रन्थ साहब में हिंसा को, मीट को जगह नहीं दी।

आप कहते हैं कि आग का सागर बड़ा गहरा है। आग का सागर नर्क-दोजक है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि इस सागर को पार करते हुए काँपने लगे। इस दोजक से डरते हुए ही ऋषियों-मुनियों ने साठ-साठ हजार, अस्सी-अस्सी हजार, चौरासी-चौरासी हजार वर्ष तप किए।

पानी का समुद्र यह दुनिया है जिसमें हम आज बैठे हैं। ऐसे ही एक-दूसरे का पर्दा है कि हम सुखी हैं! ये सुख भी आरजी है। पता नहीं ये सुख कब दुखों में तब्दील हो जाएंगे। बचपन में भी दुखी हैं माता-पिता पढ़ाना चाहते हैं लेकिन बच्चा आजादी चाहता है; यह भी दुख की घड़ी है। जवान होते हैं तो जवानी का नशा हो जाता है अपने आपको भूल जाते हैं। फिर बुढ़ापा आ जाता है घर में मान-तान घट जाता है। शरीर जवाब दे जाता है अंग-अंग में कष्ट आने शुरू हो जाते हैं, बीमारियों का जोर पड़ जाता है। हम जाकर दवाई करवाते हैं। फटे हुए कपड़े को कितना सिलेंगे?

बुढ़ी उम्र निरी बीमारी हुण की बने दवाई दा।

आग का समुद्र दोजक है, पानी का समुद्र यह दुनिया है। न इसकी लम्बाई का पता है न गहराई का पता है अगर हमें नदी पार करनी है तो हम किसी बेड़ी का सहारा लेते हैं। बेड़ी को मल्लाह चलाता है अगर बेड़ी है उसे चलाने वाला मल्लाह नहीं तो हम नदी किस तरह पार करेंगे? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गुरु जहाज खेवट गुरु बिन तरया न कोय।

गुरु 'नाम' का जहाज लेकर आता है वह खुद ही जहाज का मल्लाह होता है। आप कहते हैंः

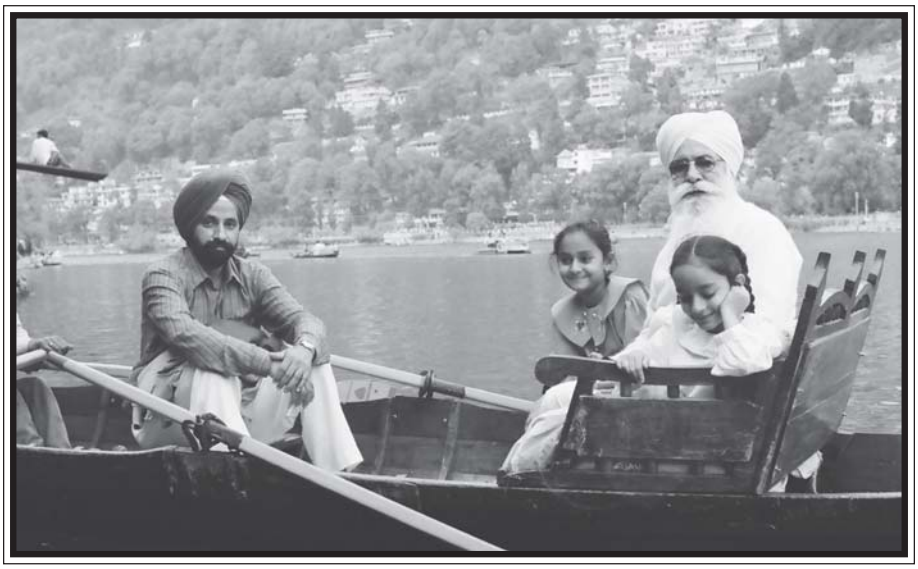

मत को भ्रम भूले संसार गुरु बिना कोई न उतरस पार।

गुरु बिना कोई पार नहीं हो सकता। गुरु ग्रन्थ साहब में किसी जगह यह नहीं लिखा कि गुरु धारण करना गुनाह है। आप आगे यह बताएंगे कि गुरु धारण करना हर एक के लिए जरूरी है और यह भी बताएंगे कि गुरु पूरा होना चाहिए। जहाँ असल है वहाँ नकल भी है, जहाँ सच है वहाँ पाखंड भी है। कबीर साहब कहते हैंः

पाखंडिया नर भोगे चौरासी खोज करो मन माही रे।

मनमुख अंधले सोझी नाहीं।। आवह् जाहे मरह् मर जाही।।

हम मनमुख हैं, मुग्ध हैं, गँवार हैं। आते हैं जाते हैं। जन्मते हैं मरते हैं। हम जानते हैं कि हम चाहे कितनी भी लम्बी उम्र भोग लें आखिर एक दिन हमें यह संसार छोड़ना ही पड़ेगा। इतिहास सतयुग में एक लाख वर्ष की उम्र लिखता है। आज सतयुग के लोग भी नहीं रहे वे संसार छोड़कर चले गए हैं। त्रेता युग में दस हजार वर्ष की उम्र रामचन्द्र या रावण जैसे भोगकर चले गए वे भी संसार में नहीं रहे। कलयुग में कोई ही सौ साल तक पहुँचता है। हमारा शरीर साठ साल में ही जवाब दे जाता है। कोई भाग्यशाली जीव ही सत्तर साल तक पहुँचता है नहीं तो मालिक चालीस-पचास साल में ही बुला लेता है।

यहाँ किसी को कर्ज लेने का दुख है तो किसी को कर्ज देने का दुख है। किसी का पति मर गया है पत्नी बिलखती फिरती है। किसी की पत्नी मर गई है पति बेचारा बिलखता फिरता है। किसी के बच्चे नहीं वह तड़पता है। किसी के बच्चे कहेकार नहीं वह तड़पता है। किसी के पास रोटी खाने के लिए पैसे नहीं वह बेचारा सड़को पर भटकता फिरता है। किसी के पास ज्यादा धन है वह इन्कम टैक्स वालों से और चोरों से डरता फिरता है। यहाँ सुख कहाँ है?

नानक दुखिया सब संसार सो सुखिया जिस नाम उद्धार।

तुलसी साहब कहते हैं:

कोई तो तन मन दुखी कोई नित उदास।
एक एक दुख सबन को सुखी सन्त का दास।

वही सुखी है जिसने मालिक का आसरा ले लिया। सन्त कहते हैं देख भाई! भजन कर परमात्मा का भाणा मान।

पूरब लिखया लेख न मिटई जम दर अंध खुआरा हे।

आप प्यार से कहते हैं कि हमारा जो पूरब कर्म लिखा है हम उन्हीं कर्मों के आधीन यहाँ आकर अच्छे या बुरे कर्म कमाने में लगे हुए हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जब जब सन्त जगत में आवें, ढूंढ भाल उनके टिक जावें।
जाए करे नित सेवा दर्शन हाजिर रहे गिरे उन चरनन।

हमें हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठना। फरियाद भी करनी है मेहनत भी करनी है अगर हम परमात्मा से मिलना चाहते हैं जन्म-मरण से बचना चाहते हैं इस दुखों की नगरी से छुटकारा पाना चाहते हैं तो परमात्मा के आगे फरियाद करनी पड़ती है। एक बच्चा सोया हुआ है माता अपने काम में मस्त है। जब बच्चा रोता है तो माता से रहा नहीं जाता वह सारे काम छोड़कर उसकी जरूरत पूरी करती है।

सन्तों के बिना संसार सूना नहीं रहता। एक बल्ब फ्यूज हो जाता है तो उसकी जगह दूसरा बल्ब लग जाता है प्रकाश वही होता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''ज्योत भी वहीं है जुगत भी वही है।'' ऐसा नहीं कि गुरु नानकदेव जी ने नया साधन बताया था या गुरु अंगददेव जी ने उनसे उल्ट साधन बताया। यह वही रास्ता है जिसे खुद परमात्मा ने बनाया है। इसे न कोई बदल सकता है न घटा-बढ़ा सकता है और न ही कोई तबदील कर सकता है। यह कुदरत के नियमों के मुताबिक ईश्वरकृत है, सनातन से सनातन है। यह रास्ता उतना ही पुराना है जितना पुराना परमात्मा है।

जिस तरह महाराज सावन सिंह जी ने बाईस साल खोज की। मैं अपने मुत्तलिक भी बताया करता हूँ कि मैंने धूनिया तपाई और जलधारे भी किए। मैं बहुत से साधुओं के पास गया। किसी ने देह पलटने की कला सिखाने की पेशकश की। मैंने उससे कहा, ''बाबा! मैं तो इंसानी जामें से ऊपर उठने की क्रिया सीखना चाहता हूँ अगर मैं बुरे कर्म करुँगा तो शेर, चीता अपने आप ही बन जाऊंगा।'' कबीर साहब

कहते हैं, ''अगर कोई देह पलटकर शेर बनकर भी आ जाए तो हम नहीं मानते कि यह कमाई वाला है; यह तो एक कला है।''

मैं बताया करता हूँ कि किसी महात्मा से 'नाम' लेने से पहले देखें! इस महात्मा ने अपनी जिंदगी में कोई भजन-अभ्यास किया है, कमाई की है? यह जिंदगी का मसला है। 'नाम' लेने के बाद खोज करना गुनाह है ऐसा नहीं कि परेशान भी हैं और सेवा भी करें।

मैंने आर्मी में इस बात को आँखों के आगे रखा कि नौकर के लिए नखरा कैसा? मैं जब महाराज जी के चरणों में गया फिर इसी बात को सामने रखा कि जहाँ सेवा में लगाए वहीं लग जाएं। यह आपकी दया थी आपने कहा था, ''मैं ही तेरे पास आऊंगा।''

आपने तीसरे दिन आकर मुझे गुफा से निकाला था। मेरे पास एक भक्त रहता था उसने रोकर महाराज जी से कहा कि मुझसे तो यह कहकर गए थे कि मैं वापिस आऊंगा। उसे लगा शायद! मैं चोला छोड़ गया हूँ क्योंकि उसे इस क्रिया का पता नहीं था। उस समय गुफा की सीढ़ियाँ टेड़ी-मेड़ी थी। उस सेवक ने महाराज जी से कहा, ''आप बीमार हैं, सीढ़ियां टेड़ी-मेड़ी हैं आप अंदर न जाएं।'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''जहाँ अजायब जा सकता है वहाँ मैं भी जा सकता हूँ।'' उस समय आपने ये लफ्ज बोले :

चलो सईयों रण वेखन चलिए, जित्थे आशिक सूली चढ़दे।
चढ़दे चढ़दे करण कलोलां ते मौतो मूल न डरदे।

अभ्यास करना आसान नहीं। पुर्जा-पुर्जा कटवाना पड़ता है अगर आसान होता तो हम सारे ही कर लेते। स्वामी जी महाराज कहते है:

जाय करे नित सेवा दर्शन हाजिर रहे गिरे उन चरनन।
पर यह बात बड़ी अति झीनी सन्त करवाऐं निन्दया अपनी।

सन्त अपनी निन्दा इसलिए करवाते हैं कि प्रेमी रह जाएं और

मक्खियां उड़ जाएं। महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंग में राजा गोपी चन्द और भर्तरी की कहानी सुनाया करते थे कि जब वे दोनों साधु बने तो लोग भेड़ो की तरह उनके पीछे लग गए। वे दोनों बहुत परेशान हुए कि हम तो दुनिया की मान-बड़ाई को छोड़कर साधु बने हैं लेकिन लोग फिर भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रहे। वे दोनों एक गरीब कुम्हार के घर जाकर बैठ गए।

महाराज जी कहा करते थे कभी इत्तर की डिब्बी का ढ़क्कन खुला भी रह जाता है तो महक आ जाती है। धीरे-धीरे पड़ोस में पता चला कि कुम्हारों के घर बड़े अच्छे महात्मा हैं। यह खबर राजा तक भी पहुँची। राजा महात्मा के दर्शन करने के लिए चल पड़ा। जहाँ राजा जाता है वहाँ प्रजा भी चल पड़ती है। बहुत बाजे-गाजे बजने लगे तो गोपीचन्द ने पूछा, ''यह कैसा शोर है?'' कुम्हार ने बताया कि राजा आपके दर्शनों के लिए आ रहा है। बाहर छिड़काव हुआ लोग इंतजार करने लगे कि महात्मा कोई वचन-विलास सुनाएंगे।

गोपीचन्द और भर्तरी ने विचार किया। एक ने कस्सी और दूसरे ने डंडा पकड़ लिया। एक ने कहा, ''आज न्यौता खाने मैं जाऊंगा।'' दूसरे ने कहा, ''कल तू गया था सारे मालपूड़े खा गया।'' पहले ने कहा उससे पहले तू गया था तो सारा हलवा अकेला ही खा गया। यह कहते-कहते दोनों आपस में लड़ पड़े। एक ने डंडा मारा दूसरे ने उसे कस्सी मारी। राजा और प्रजा हाथ पर हाथ मारकर चले गए कि ये अच्छे साधु हैं जो रोटियों के पीछे लड़ रहे हैं। वे दोनों खामोश होकर अंदर जाकर भजन पर बैठ गए कि मक्खियां टल गई।

निन्दया चौकीदार बिठाई कोई जीव घुसने न पाई।

हर किसी को चौकीदार की जरूरत होती है। सन्तों का काम निन्दा ही करती है। सन्तों के पास प्रेमी सात समुद्र पार से भी आ जाते हैं सन्तों को प्रेमियों की ही जरूरत होती है। अगर सन्त मिल

जाएं हमें 'नाम' दे दें और हम भजन करने लग जाएं तो भजन करने से पता लगता है कि भजन के क्या फायदे हैं 'नाम' के क्या फायदे हैं।

इक आवह् जावह् घर वास न पावह्।। किरत के बांधे पाप कमावह्।।

एक आते हैं जाते हैं जन्मते हैं मरते हैं। अभी एक मौत से छुटकारा नहीं होता कि दूसरी आँखों के आगे खड़ी होती है उससे छुटकारा नहीं होता आगे और कलबूत घड़ा होता है; दस नंबरियों की तरह हथकड़ी लगी रहती है।

अंधले सोझी बूझ न काई लोभ बुरा अहंकारा हे।।
पिर बिन क्या तिस धन सींगारा।। पर पिर राती खसम विसारा।।

गुरु नानकदेव जी ने हमारी आत्मा को स्त्री और परमात्मा को पति कहकर बयान किया है। जिस तरह कोई कुँवारी लड़की या विधवा औरत हार-श्रृंगार लगाए तो समाज उसे अच्छा नहीं समझता। इसी तरह हम जब तक भक्ति करके परमात्मा से नहीं मिल लेते हम चाहे जितना भी जप-तप या पुण्यदान कर लें ये सब फोकट कर्म हैं। उसी तरह जो स्त्री अपने पति को छोड़कर अलग फिरती है उसे तृप्ति किस तरह आ सकती है? गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

कामवस कामी बहु नारी परगृह जो न चूके।
दिन परत करे करे पछतापे लोभ सोग में सूके।

सन्तों का भाव औरत के लिए ही नहीं है अगर मर्द भी व्याभिचार करता है तो वह अच्छा नहीं। जब तक हमें परमात्मा नहीं मिलता, परमात्मा का रास्ता नहीं मिलता हम तब तक फोकट श्रृंगार बनाते हैं कि शायद परमात्मा हमारी लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं मंजूर कर लेगा?

परमात्मा आपके अंदर बैठा आपकी छोटी से छोटी आवाज को सुनता है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं कि परमात्मा हाथी से पहले चींटी की पुकार सुनता है पर हम बाहर बाजे बजाने में लगे हुए हैं।

महाराज सावन सिंह जी के दरवाजे के आगे गरम ख्याल वाले लोगों ने धर्म स्थान बना लिया। वे रोज ही ढोल-ढमाका बजाया करें। महाराज जी हँसते हुए कहा करते थे, ''देखो भाई! सोए हुए परमात्मा को जगाने वाले आ गए हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बिन बोलया सब कुछ जाणदा किसपे करिए अरदास।

परमात्मा बिना बोले ही सब कुछ जानता है तो किसके आगे अरदास करें! मैं अपने पिता के अंत समय के बारे में बताया करता हूँ कि हम सभी हिन्दु, सिक्ख लोग क्रियाक्रम करते समय चारपाई, बर्तन सब कुछ ही देते हैं। हमारे परिवार वाले बर्तन लाकर भाई को अरदास करने के लिए कहते जाएं कि यह चम्मच भी कह दे! चारपाई के लिए भी कह दे! कपड़े के लिए भी कह दे! भाई अरदास करते-करते परेशान हो गया। उसने मुझसे कहा कि कुछ और भी कहना है? मैंने कहा, ''कह दे कि यह फिर से मेरा बाप न बने।'' मैंने कहा अगर परमात्मा भाई की बात मानता है तो यह मेरी बात भी कहेगा। कबीर साहब कहते हैंः

जीवित पितृ न माने कोऊ मुए श्राद्ध कराही।
पितृ भी बपरो को को पावे कौआ कूकर खाही।

आप जीवित माता-पिता को तो पानी का लोटा तक नहीं देते, मरने के बाद धन लुटाते हैं कि हमारा बुजुर्ग चारपाई पर सोए जबकि जीते जी उससे चारपाई भी छीन लेते हैं।

ज्यों बेसुआ पूत बाप को कहीऐ त्यों फोकट कार विकारा हे।।

हम कहते हैं कि हमें गुरु की जरूरत नहीं हम जाने हमारा काम जाने। हम जिस महात्मा की बानी पढ़ते हैं उसमें विश्वास भी रखते हैं। वह महात्मा कहता है, ''देखो प्यारेयो! वेश्या का पुत्र किसको अपना बाप कहेगा, वह किसकी जायदाद का वारिस बनेगा? अगर

कोई वेश्या सति होना चाहे तो वह किसके साथ सति होगी? उसके पास तो सैंकड़ो ही आते हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

ज्यों निगुरा सिमरन करे दिन में कई इक वार।
वेश्या सति होना चाहे कौन करे परतार।

प्रेत पिंजर मह् दूख घनेरे।। नरक पचह् अग्यान अंधेरे।।

आप प्यार से कहते हैं, ''नाम' नहीं लिया आगे हमारी संभाल करने वाला कोई गुरु-पीर नहीं। प्रेत बनना पड़ता है, प्रेत की योनि सबसे मुश्किल होती है; यह जामा बहुत कष्ट वाला होता है। जो सतसंगी अंदर जाते हैं वे जब सूक्ष्म देश को पार करते हैं तो आँखों से देखते हैं कि काल उन्हें नर्क में किस तरह सजा देता है।''

धरमराय की बाकी लीजै जिन हर का नाम विसारा हे।।

जिसने इंसान का जामा पाकर लापरवाही की इस जामें को शराबों-कबाबों मे खो दिया है उसके दिल में कहीं यह ख्याल हो कि हमें पूछने वाला कोई नहीं! जिस मालिक ने इतनी बड़ी दुनिया पैदा की है सूरज-चन्द्रमा बनाए हैं, वक्त पर मौत-पैदाईश होती है वह हमें बेखबर छोड़कर नहीं बैठा। वह अच्छी तरह से हमारा हिसाब-किताब लिखता है फिर धर्मराज के सामने पेश किया जाता है। धर्मराज हमारे कर्मों के मुताबिक अगली योनि में भेज देता है। पहली ख्वाहिशें पूरी नहीं होती हम नई ख्वाहिशें पैदा कर लेते हैं।

सूरज तपे अगन बिख झाला।। अपत पसू मनमुख बेताला।।

आप कहते हैं कि नर्कों में आग का सूरज तपता है। गुरु नानक साहब हमें डराने के लिए सुनी-सुनाई बातें नहीं कहते, आपने जो कुछ देखा वही कहते हैंः

सन्तन की सुन साची साखी जो बोलन सो पेखन आखी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर सूरज की एक चिन्गारी भी इस संसार में आ जाए तो सारी धरती जल जाए। हम सूरज से कितनी दूर हैं फिर भी दोपहर में सूरज की गर्मी सहन नहीं होती। गर्मियों में हम एयर-कंडीशनर और कूलर वगैरहा का इस्तेमाल करते हैं, पहाड़ों पर भी चले जाते हैं। जो लोग **आदत** के अनुसार मन के कहने पर चलते हैं उन्हें इन थम्बों के साथ लिपटाया जाता हैं।

आसा मनसा कूड़ कमावह् रोग बुरा बुरयारा हे।।

यह जीव दुनिया के पदार्थों की आशा करता है। पुत्र की आशा की पुत्र मिल गया। पति की आशा की पति मिल गया। धन-दौलत की आशा की धन-दौलत मिल गया। ये सब कूड़ हैं फनाह है इनमें से कुछ भी हमारे साथ नहीं जाएगा; अकेले आए हैं अकेले ही जाना है। इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है हाथ पसारकर चला जाता है। कूड़ के साथ प्यार करता है कूड़ फनाह है।

मस्तक भार कल्लर सिर भारा।। क्योंकर भवजल लंघस पारा।।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि इसके सिर के ऊपर पाप और पुण्यों का बोझ है। आगे आग का समुद्र है न उसकी गहराई का पता है न चौड़ाई का पता है यह उस भवसागर को कैसे पार करेगा?

सतगुर बोहिथ आद जुगादी राम नाम निसतारा हे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि उस आग के समुद्र को पार करने में कौन हमारी मदद कर सकता है? क्योंकि हमने इस दुनिया के पदार्थों की आशा की वे पदार्थ यहीं रह गए। जब हमारा शरीर ही साथ नहीं जाएगा तो क्या हमारे बच्चे साथ जाएंगे? क्या पति के साथ पत्नियां और पत्नियों के साथ पति जाएंगे? क्या हमारा धन-दौलत साथ जाएगा? जिस सतगुरु ने हमे 'नाम' दिया है हमारी हामीं भरी है वही हमारे साथ जाएगा।

सज्जन सेही आखिए जे चलदयां नाल चलन।
जित्थे लेखा मंगिए तित्थे खड़े दसन।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आला दर्जे के सतसंगी जिन्होंने भजन-अभ्यास की कमाई की होती है उनकी कुल तर जाती है, उनके घर के लोगों तक की भी संभाल होती है।''

जब मैं कनाडा गया वहां अमेरिका से एक मेम आई जिसकी दो लड़कियां नामलेवा हैं। वे दोनों मियां-बीवी शराब वगैरहा की **आदत** नहीं छोड़ सके 'नाम' नहीं ले सके। उन लड़कियों के माता-पिता रोज ही गुरु की बातें सुनते घर में सतसंग का माहौल बन गया। अंत समय में उन लड़कियों के पिता के सिरहाने महाराज जी की तस्वीर लगा दी ताकि उसे दर्शन होते रहें। आखिर महाराज ने उसे दर्शन दिए अंत समय में उसकी संभाल की।

मैं जब तक कनाडा में रहा उस मेम ने सप्ताह भर सतसंग सुना। उसने मुझसे कहा, ''मेरी दो लड़कियां नामलेवा हैं हमारे घर में चर्चा होती रही है; मेरे पति की संभाल हुई हैं। हमने अच्छी तरह तीनों महाराज जी देखे इसमें कोई शक की बात नहीं।'' अगर मौत के समय गुरु संभाल नहीं करता तो उस गुरु को सलाम करने में ही फायदा है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

काचे गुरु को छोड़ो ये भी पाप कटा।

अगर शिष्य 'नाम' लेकर निन्दा-चुगली करता है गाय के सिर काटता है और शराबों-कबाबों में मस्त है तो गुरु ने कौन सा किसी से कर्ज लिया है? आप सोचकर देखें! गुरु अपनी कमाई में से अपना निर्वाह करता है। वह चाहे खेती करे मजदूरी करे। बिना स्वार्थ के जो हमारी सेवा करता है वही सन्त है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

घाल खाए कुछ हत्थों दे, नानक राह पछाणें से।

हम जब तक अपने दस नाखूनों की मेहनत करके अपना पेट नहीं पालते और उसमें से भी लंगर में सेवा नहीं डालते तब तक परमात्मा दरवाजा नहीं खोलता। सन्तों ने किरत को सबसे ऊँचा रखा है, माया की चमक-दमक को कोई पहल नहीं दी।

सतगुरु के 'नाम' का जहाज आदि-जुगादि से चला आ रहा है। वह हमें बाँह पकड़कर पार उतारता है। वही सज्जन है जो कष्ट के समय काम आए अगर हम रात को रास्ता भूल जाएं जंगल में शेर हो वहां हमें कोई अपना मिल जाए तो खुशी होती है। इसी तरह हमें पता ही है कि मौत के समय कितना कष्ट होता है घरवाले नजदीक ही खड़े होते हैं उन्हें यह भी पता नहीं होता कि मौत का फरिशता आया कहाँ से और कान से पकड़कर ले कहां गया?

सिर नूं फेर वैद्य उठ जान्दे आवे वक्त आखिर जदों।

आखिरी समय में डॉक्टर भी कहता है कि अब इसे घर ले जाएं और राम-राम करें।

कच्चड़यां सो तोड़ दोस्ती, ढूंढ़ सज्जण सन्त पकयां।
ओ जिविंदे विछड़यां मुयां न जाईं छोड़।

पुत्र कलत्र जग हेत प्यारा।। माया मोह पसरया पासारा।।

पुत्र पौत्र ये सब माया का पसारा हैं हम इनके मोह में फँसकर करण-कारण परमात्मा को भूलकर बैठ जाते हैं।

जम के फाहे सतगुर तोड़े गुरमुख तत बीचारा हे।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''गुरुमुख जानते हैं कि गुरु किस तरह हमें दुःख के समय में से निकालकर ले जाता है। सिर्फ पूरा गुरु ही काल के संगल तोड़ सकता है और तोड़ता भी है।''

कूड़ मुट्ठी चालै बहु राही।। मनमुख दाझै पड़ पड़ भाही।।

अमृत नाम गुरु वडदाणा नाम जपो सुख सारा हे।।

जिनका कूड़ फनाह चीजों के साथ प्यार है उनका दीन-ईमान दुनिया ही है। वे लालच के लिए झूठ बोलने से भी परहेज नहीं करते, उन्हें किसी पर भी ऐतबार नहीं। आप देखते हैं कि हरिद्वार वाले कुरुक्षेत्र जाते हैं उन्हें हरिद्वार पर ऐतबार नहीं। कुरुक्षेत्र वाले हरिद्वार जाते हैं उन्हें कुरुक्षेत्र पर ऐतबार नहीं। हमारे नजदीक बुडढ़ा जोहड़ है यहां के लोग अमृतसर जाते हैं; अमृतसर वाले तरनतारन जाते हैं। मनमुखों को किसी पर भी ऐतबार नहीं, ये जगह-जगह फिरते हैं। जो गुरुमुखों से 'नाम' ले लेते हैं जिन्हें गुरु पर भरोसा है वे दिन-रात 'नाम' की कमाई करते हैं।

सतगुरु 'नाम' का भंडारी बनकर आता है। वह हमें 'नाम' का दान देता है, जो दान करता है वह किसी से फीस नहीं लेता किसी पर कोई अहसान नहीं करता। वह तो देना ही जानता है। गुरु हमें 'नाम' का दान देने के लिए आता है हम पर कोई अहसान नहीं करता। कबीर साहब कहते हैंः

नाम रत्न धन कोठरी खान खुली घट माहे।
सेत मेत ही देत हूँ ग्राहक कोई नाहे।

सतगुरु 'नाम' का दाता बनकर आता है लेकिन 'नाम' के ग्राहक बहुत कम होते हैं।

सतगुर तुट्ठा साच दृढ़ाए।। सभ दुख मेटे मारग पाए।।

सतगुरु हमसे 'नाम' जपवाता है। सबसे बड़ा दुःख मौत-पैदाईश का है। हिन्दु शास्त्रों में लिखा है और तुलसी साहब भी मौत के समय का जिक्र करते हुए कहते हैंः

तुलसी मृत्यु के समय पीड़ा होत अपार।
बिच्छु एक हजार का डंक सहे इक बार।

मृत्यु के समय एक हजार बिच्छुओं के डंक जितनी वेदना होती है। मरते समय जुबान बंद हो जाती है मरने वाला बोल भी नहीं सकता। वही आँखें होती हैं लेकिन उनकी रोशनी खत्म हो जाती है उसे कुछ दिखाई नहीं देता। घर के लोग दीपक जलाकर कहते हैं कि दीपक की तरफ देख! उस दीपक की तरफ तो जीते जी देखना था। सतगुरु दया करके 'नाम' जपवाता है, 'नाम' के रास्ते पर डालता है।

कंडा पाए न गडई मूले जिस सतगुर राखणहारा हे।।

आप प्यार से कहते हैं जिसके सिर के ऊपर पूरे गुरु का हाथ है उसे कोई तकलीफ नहीं होती, गुरु हर जगह संभाल करता है; हर जगह मदद करता है। आप सात समुद्र पार भी चले जाएं तब भी गुरु का हाथ आपके ऊपर होता है। हमारी आँखें बंद हैं हमारी आत्मा पर स्थूल पर्दा है उसके अंदर सूक्ष्म और सूक्ष्म के अंदर कारण पर्दा है। सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण और पच्चीस प्रकृतियां हैं इन सबके अंदर हमारी आत्मा ढ़की हुई है अपना आप देख नहीं रही। गुरु 'नाम' देकर बेफिक्र नहीं होता वह हमेशा हमारे साथ होता है।

मैं बताया करता हूँ कि मैं एक बार अपनी रिश्तेदारी में गांव टोपाली गया। मैं शाम के समय नहर पर सैर करने जा रहा था। वहां लोग इकट्ठे थे। मैंने पूछा, ''यहां क्या है?'' उन लोगों ने बताया कि यहां एक बाबा ने तप किया है आज भोग डाला है।

हम जमाती के साथ कुछ प्यार भी होता है। मैं वहां चला गया। वह बाबा चारपाई पर बैठा हुआ था। दूसरे लोग जमीन पर बैठे थे किसी के नीचे दरी इत्यादि नहीं थी। मुझे देखकर उस बाबा ने कहा, ''इसके लिए चारपाई या दरी लेकर आओ।'' मैंने कहा, ''नहीं जी! मैं तो नीचे ही बैठूंगा।'' उसने कहा, ''मुझे तेरे पीछे सफेद कपड़ों वाला दिखाई दे रहा है।'' मैंने कहा, ''बाबा! मैं तो यहां अकेला ही

बैठा हूँ।'' मैं वहां जितनी देर बैठा रहा वह बार-बार यही कहता रहा कि मुझे तेरे पीछे सफेद कपड़ो वाला खड़ा हुआ दिखाई दे रहा है। इन लोगों में अंर्तयामता होती है। आँख वालों को ही ऐसा दिखाई देता है।

जिन प्रेमियों की सुरत टिक जाती है उन्हें पता लगता है वे प्रेमी बताते हैं कि हमने आपके सिर के ऊपर महाराज सावन, महाराज कृपाल और जिस सन्त बाबा बिशनदास से मुझे 'दो-शब्द' का भेद मिला था हालाकि उनकी तस्वीर कहीं नहीं है वे कहते हैं कि हमें ऐसा लगा कि जैसे वह बाबा बिशनदास थे। प्यारेयो! जिसने 'नाम' दिया होता है वह बेखबर नहीं होता।

गुरु मेरे संग सदा है नाले, सिमर सिमर तू सदा संभाले।

हम कहते हैं कि हम चाहे जो मर्जी करें कौन देखता है? परमात्मा और गुरु परछाई की तरह हमारे साथ-साथ फिरते हैं। हम पहले माता के पेट में इकरार करके आए थे कि हे परमात्मा! हम तेरा दसवंद निकालेंगे। बहुत से प्रेमी तनख्वाह मिलने पर फसल आने पर दसवंद निकाल देते हैं लेकिन वक्त का दसवंद चौबीस घंटो में से अभ्यास के ढ़ाई घंटे बनते हैं जिसे कोई सूरमा ही निकालता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जिस तरह मौत के समय कष्ट होता है उसी तरह पैदाईश के समय भी कष्ट होता है।''

मुख तले पैर उपरे वसन्दा कुहथड़े थाएं।
नानक सो धनी क्यों विसारया ते उदरे जिसदा नाएं।

बच्चा गंदी जगह पर पड़ा हुआ है। वह बहुत तंग जगह है जहां से माता का पेशाब टट्टी गुजरता है। मुँह नीचे की तरफ और पैर ऊपर की तरफ हैं। माता कोई गलत चीज खा ले तो बच्चे को तकलीफ होती है। यह वहां साँस-साँस के साथ परमात्मा को याद करता है। आप सोचकर देखें! वहां कितना कष्ट है? हम बाहर आकर कहते हैं कि परमात्मा की क्या जरूरत है?

खेहू खेह रलै तन छीजै।। मनमुख पाथर सैल न भीजै।।
करण पलाव करे बहुतेरे नरक सुरग अवतारा हे।।

आप प्यार से कहते हैं कि हमारा शरीर पाँच तत्वों का बना हुआ है। जब परमात्मा इसमें से अपनी किरण आत्मा उठा लेता है तो मौत हो जाती है तत्व तत्वों में मिल जाते हैं। यह जिस्म मुर्दा बन जाता है। आँखे, जुबान सब वही होते हैं लेकिन हरकत नहीं कर सकते।

जब दुनिया की प्रलय आती है मिट्टी को पानी घोल लेता है। पानी को अग्नि खुष्क कर देती है। अग्नि को हवा खा जाती है। हवा को आकाश खा जाता है। आकाश ब्रह्म में जाकर समा जाता है। सब अपने भंडार में जाकर समा जाते हैं, दुनिया में धंधुकारा छा जाता है।

हमारे दिल पत्थरों की तरह कठोर हैं। महात्माओं ने बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे हैं, सतसंग किए हैं हम फिर भी पत्थर की तरह अपने अंदर एक छींटा भी नहीं जाने देते। हम परमात्मा को धोखा देने की कोशिश करते हैं लेकिन वह अंदर बैठा कैसे धोखा खाएगा?

माया बिख भुयंगम नाले।। इन दुबिधा घर बहुते गाले।।
सतगुर बाझों प्रीत न उपजै भगति रत्ते पतीआरा हे।।
साकत माया कौ बहुत धावह्।। नाम विसार कहा सुख पावह्।।
त्रिहगुण अंतर खपह् खपावह् नाहीं पार उतारा हे।।
कूकर सूकर कहीऐ कूड़यारा।। भौंक मरह् भौं भौं भौंहारा।।
मन तन झूठे कूड़ कमावह् दुरमत दरगह हारा हे।।
सतगुर मिलै त मनुआं टेकै।। राम नाम दे सरण परेकै।।
हर धुन नाम अमोलक देवै हर जस दरगह प्यारा हे।।
राम नाम साधु सरणाई।। सतगुर बचनी गत मित पाई।।
नानक हर जप हर मन मेरे हर मेले मेलणहारा हे।।

गुरु नानकदेव जी ने इस छोटे से शब्द में हमें अच्छी तरह समझाया है कि मालिक की भक्ति क्यों करनी है और भक्ति के क्या फायदे हैं? सन्त-सतगुरु कोई कौम बनाने के लिए नहीं आते और न ही पहले की बनी हुई किसी कौम को तोड़ने के लिए आते हैं। वे परमात्मा के भेजे हुए परमात्मा के हुक्म में आते हैं और जिन-जिन आत्माओं के लिए हुक्म होता है उन्हें 'शब्द-नाम' का भेद देकर परमात्मा के पास वापिस चले जाते हैं।

सन्तों का परमात्मा के साथ समुद्र और लहर की तरह रिश्ता होता है। जिस तरह लहर को समुद्र से अलग नहीं कर सकते क्योंकि लहर समुद्र का एक हिस्सा है। लहर दो-चार मिनट के लिए बाहर आती है फिर उसी पानी की तह में जाकर बैठ जाती है।

गुरु नानकदेव जी हमें बड़े प्यार से समझाते हैं अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं करते तो हमारा पत्थर जैसा दिल नहीं पिघलता इसमें तड़प पैदा नहीं होती। हमारी भी यही हालत है जिस तरह कुत्ते आते हैं और भौंक-भौंककर चले जाते हैं।:

गुरु मंत्रहीनस जो प्राणी दीर्घंत जन्म भ्रष्टने।
कूकर सूकर गदर्भ सर्पने खल तुल्हे।

यह कुत्ता, सर्प, गधा बनकर बुरी योनियों में जन्म लेता हैं। परमात्मा ने इंसान का जामा बहुत कीमती हीरा अपनी भक्ति के लिए मौका दिया है, इस जामें में बैठकर परमात्मा की भक्ति करें।

महाराज जी कहानी सुनाया करते थे कि एक महात्मा किसी गरीब महाजन के घर चला गया। उस महाजन ने महात्मा के आगे अपनी गरीबी का इजहार किया कि मेरे ऊपर बहुत कष्ट हैं अगर आप दया करें तो मेरा भी भला हो सकता है। महात्मा के पास पारस था। महात्मा ने महाजन से कहा, ''इस पारस में यह गुण है इसे तू लोहे के साथ लगा देगा तो लोहा सोना बन जाएगा।''

पारस को पाकर महाजन बहुत खुश हुआ। महाजन ने बाजार जाकर लोहे का भाव पूछा? बाजार वालों ने कहा कि पहले तो लोहा पाँच रूपये क्विंटल था अब दस रूपये हो गया है। महाजन ने कहा कि मैं घाटे वाला सौदा नहीं करता जब लोहा पाँच रूपये क्विंटल होगा मैं फिर आकर ले जाऊँगा। महाजन दोबारा लोहे का भाव पूछने गया तो बाजार वालों ने कहा पहले लोहा दस रूपये क्विंटल था अब पन्द्रह रूपये क्विंटल हो गया है। महाजन ने कहा कि मैं घाटे वाला सौदा नहीं करता जब पाँच रूपये क्विंटल होगा तब आकर ले जाऊंगा।

महाजन जब तीसरी बार बाजार गया तो बाजार वालों ने कहा कि अब लोहा बीस रूपये क्विंटल हो गया है। महाजन ने कहा कि जिस दिन लोहा पाँच रूपये क्विंटल होगा मैं तभी लेकर जाऊंगा।

तीन महीने बाद महात्मा महाजन के पास आए। उनके दिल में ख्याल था कि महाजन ने बड़े-बड़े महल बनवा लिए होंगे, कारें खरीद ली होंगी, अच्छा व्यापार चलता होगा उससे मिलकर बहुत खुशी होगी। महात्मा ने आकर देखा कि महाजन का वही टूटा हुआ घर था और वह उसी हालत में बैठा हुआ था। महात्मा ने महाजन से कहा, ''तेरे साथ तीन महीने का वायदा था, अब मेरा पारस वापिस दे दे।'' महात्मा पारस लेकर चले गए महाजन हाथ मलता रह गया।

यह तो एक कहानी है पारस इंसान का जामा है, 'नाम' सोना बनाना है। हम इस समय को उस महाजन की तरह खराब कर रहे हैं। मौत आने पर पछताते हैं फिर पछताने से क्या बनता है? कबीर साहब कहते हैं:

अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत।

परमात्मा ने अपनी दया-मेहर करके हमें इंसान का जामा दिया है हमें इस जामें से फायदा उठाना है। वस्तु आपके अंदर है आप उसकी खोज बाहर ग्रन्थों, पोथियों, मंदिरों, मस्जिदों में करते हैं।

महात्मा कहते हैं कि सच्चे से सच्चा मंदिर गुरुद्वारा आपका शरीर है। हम अपने हाथ से बनाए हुए मंदिर गुरुद्वारों में कितनी सफाई रखते हैं। वहां हम बीड़ी सिगरेट नहीं पीते, शराब नहीं पीते।

परमात्मा के बनाए हरिमंदिर जिसमें वह खुद बैठा है इसमें हम शराब, मीट, बीड़ी-सिगरटें डालते हैं; बुरे कर्म करते हैं लेकिन मिलना परमात्मा से चाहते है। सच्चखंड का रहने वाला परमात्मा क्या हम शराबी-कबाबियों के अंदर प्रकट होगा? हमने परमात्मा को बिठाने के लिए जगह बनानी है। तुलसी साहब कहते हैंः

दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिए।
ध्यान गैरों का उठा उसके बिठाने के लिए।

परमात्मा को बिठाने के लिए इस घर को साफ करें। परमात्मा के अलावा हमें जो कुछ भी नजर आता है ये हमारे साथ नहीं जाएगा। हम नहीं जानते कि मौत ने किस जगह किस समय हमारा गला दबा देना है; मौत किसी ऐक्सीडेंट या किसी लड़ाई-झगड़े में हो सकती है। यह परमात्मा की बनाई हुई प्लेनिंग है। गुरु तेगबहादुर कहते हैंः

मता करे पूरब की तांई पश्चिम ही ले जात।

हम पूर्व की तरफ जाने की सोचते हैं परमात्मा पश्चिम की तरफ ले जाता है, यह उसकी मौज है। परमात्मा ने जितने श्वास दिए हैं हमें भक्ति करके इससे पूरा फायदा उठाना चाहिए।

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान में सत्तसंगों के कार्यक्रम

07, 08, 09, 10, 11 सितम्बर - 2009
23, 24, 25 अक्टूबर - 2009
27, 28, 29 नवम्बर - 2009
25, 26, 27 दिसम्बर - 2009
02, 03, 04, 05, 06 फरवरी - 2010

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *जो लोग यहाँ बैठे हैं क्या वे पिछले जन्मों में भी कभी मिले थे? अगर हमें पिछले जन्मों के बारे में पता लग जाए तो क्या इससे हमारी रुहानी तरक्की में फायदा होगा? सतगुरु की भक्ति और मज़हबी पागलपन में क्या फर्क है? हम सतगुरु के प्रति अपनी श्रद्धा किस तरह से बढ़ा सकते हैं?*

बाबा जी: सन्त ऐसी भविष्यवाणियाँ नहीं किया करते; किसी को यह नहीं बताते कि तूने पहले यह पुण्य किया है या पाप किया है? तू पहले हाथी, घोड़ा, मर्द या औरत था। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिन लोगों के साथ हमारा पिछला सम्बंध होता है वही लोग फिर इकट्ठे होते हैं।'' गुरु नानकदेव जी ने भी कहा था उड़ने वाले को उड़ने वाला मिलता है।

आपने अनुराग सागर में पढ़ा है कि काल ने एक टाँग पर खड़े होकर सत्तर युग बड़ी भारी तपस्या की। मालिक ने खुश होकर उसे रुहें सौंप दी। काल आत्मा को न खत्म कर सकता है और न ही बना सकता है। काल की यही कोशिश होती है कि आत्मा को कर्मों के जाल में फँसाए रखे। दयाल ताकत ने सन्तों के आने के लिए रास्ता रखा है कि हमारी ताकत भी इस संसार में आया करेगी उस ताकत को तूने इंसान का जामा जरूर देना है।

काल ने कहा, ''सन्त आ सकते हैं लेकिन मेरी कुछ शर्तें हैं जिन्हें निभाना बहुत जरूरी हैं। पहली शर्त यह है कि मैं जिस आत्मा को जहाँ जन्म दूँ चाहे उसका शरीर कुबड़ा करूँ, सीधा करूँ चाहे पशु, पक्षी कुछ भी बनाऊँ वह आत्मा उसी योनि में खुश रहे; उसे वही योनि प्यारी लगे। दूसरी शर्त यह है कि किसी आत्मा को पिछले जन्म

का ज्ञान न हो कि मैं पिछले जन्म में क्या था?'' अगर हमें यह पता लग जाए कि हम सुख इस कर्म का और दुख इस कर्म का भोग रहे हैं तो हम कभी भी बुराई न करें, अगर काल ने दयाल से ये वर न लिए होते तो सन्तों के लिए इस संसार से आत्माओं को ले जाने का काम बड़ा आसान हो जाता।

सूअर की योनि सबसे मुश्किल है, वह गंद खाता है गंद में ही सोता है अगर उसे मारे तो वह भागकर बचने की पूरी कोशिश करता है। वह इतनी बुरी योनि को भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं।

एक मालिक के प्यारे के लिए किसी अन्धे को आँख दे देना, लंगड़े को टाँग दे देना कोई मुश्किल काम नहीं। अगर सन्त एक जिले में किसी को आँख दे दें और दूसरे जिले में किसी को टाँग दे दें तो सारी दुनिया ही 'नाम' लेने के लिए तैयार हो जाएगी। सन्त संसार में आकर ऐसे करिश्में नहीं दिखाते। वे कुदरत के नियमों के अनुसार जीते हैं और अपने सेवकों को भी हिदायत देते हैं कि अपने अंदर से 'नाम' की पूँजी का धुँआ तक न निकलने दें।

सतगुरु भक्ति करने से हमारे अंदर प्यार पैदा होता है। हम हर एक के अंदर परमात्मा को बैठा हुआ देखते हैं। किसी पर कीचड़ फैंकने की बजाए अपने अवगुण देखते हैं। लोगों की नहीं अपनी परख करते हैं। परमात्मा के आगे अरदास करते हैं कि तू हमारे ऊपर मेहर कर, हमारी परख नहीं करना हमारे ऊपर अपनी दया रखना।

आज जो भी लड़ाई झगड़े या नफरत फैल रही है यह सब मजहबी पागलपन है। आज हम ईराक़ और ईरान में देख रहे हैं वे सभी मौहम्मद साहब को और कुरान को मानने वाले हैं जबकि एक तरफ सुन्नी है और दूसरी तरफ शिया हैं। सुन्नी कहते हैं, ''हम अच्छे हैं हमने शियाओ पर जीत प्राप्त करनी है और शिया कहते हैं, ''हम अच्छे हैं हमने सुन्नियों पर जीत प्राप्त करनी है।''

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

प्रेम सच्ची पूजा और तपस्या है

जो लोग तपस्या करते हैं, कठोर साधन करते हैं वे ऐसा करके रिद्धि-सिद्धि या करामातों को पा लेते हैं जोकि माया के जाल में फँसने का सामान है। ऐसा करके आदमी मालिक से और दूर हो जाता है। एक आदमी ने कई सालों की तपस्या के बाद पानी के ऊपर चलकर पार होने की सिद्धि को प्राप्त किया जबकि दूसरा आदमी बेड़ी वाले को दो-चार पैसे देकर दरिया से पार हो गया। पहले आदमी की कई सालों की मेहनत और तपस्या का क्या फायदा?

प्रेम सच्चा तप है। प्रेम नम्रता बख्शकर प्रीतम की रजा में रहकर अपने आपको दुनिया के दुखों-सुखों से हटा लेता है। उसका दिल प्रीतम के बिना और किसी तरफ नहीं जाता। चाहे कितने भी दुख और कष्ट सिर पर आएं वह बिना किसी जाहरी हाल पुकार के सब्र के साथ चुपचाप गुजार लेता है और दिल ही दिल में अपने प्रीतम को याद करता है।

वह **प्रेम** की एक नई दुनिया बनाकर बसता है। उसकी कशिश उसे बाहर के दुख-दर्द प्रतीत नहीं होने देती। इसके साथ ही साथ उसके अंदर प्रीतम की बख्शीश के रूहानी भेद खुल जाते हैं और मालिक की नजदीकी होती जाती है। इस **प्रेम** के सुख को केवल कोई प्रेमी ही जानता है। इस प्रेम में रस है। उस रस को पाकर प्रेमी सब ख्वाहिशों को जला देता है फिर मालिक ही मालिक रह जाता है। प्रेम एक जलती आग है जिसमें प्रीतम को छोड़कर सब कुछ जल जाता है।

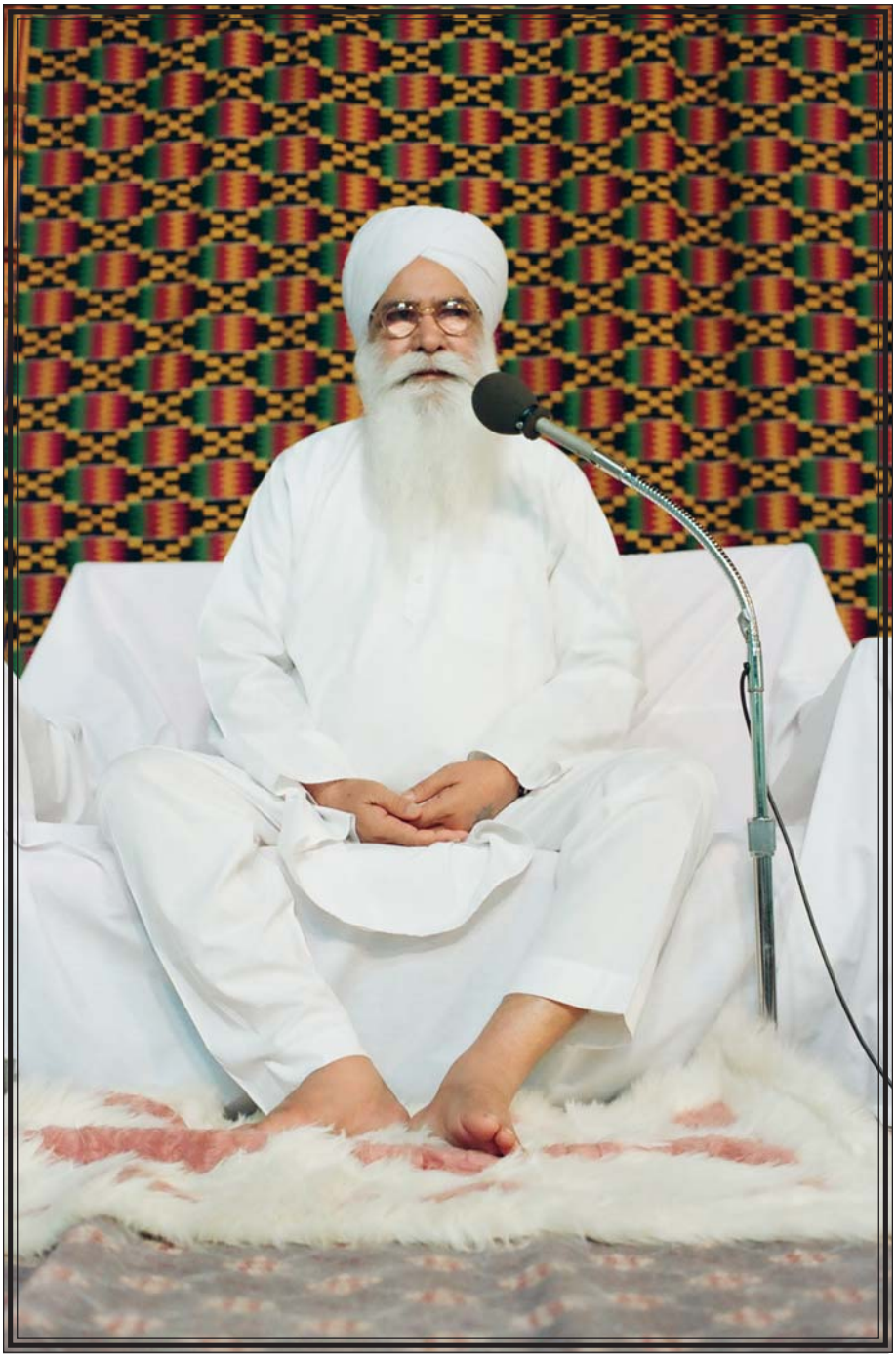

जब **प्रेम** की ज्वाला प्रज्वलित होती है तो बिना प्रीतम के जो कुछ भी है उसे फूँक कर नाश कर देती है। प्रेम ही सच्चा कर्म-धर्म है। प्रेम सब कर्मों-धर्मों, जपों का सार है। प्रेम रूह का सच्चा श्रृंगार है।

माई मेरे मन की प्रीत ऐही कर्म धर्म जप।
ऐही राम नाम निर्मल है रीत।

प्रेम मालिक की सच्ची नमाज है और मालिक से मिलने का जबरदस्त तरीका है। जिसमें प्रेमी मस्ती के मारे कदमों पर जमकर चल नहीं सकता, कभी इधर गिरता है तो कभी उधर गिरता है। प्रीतम की याद आने पर प्रेमी के दिल में सरूर और आँखों में चमक आ जाती है; एक अजब किस्म की मस्ती हुलारे देती है। मस्ती के आलम में प्रभु की एक माला फेरने का असर हजारों माला फेरने से बढ़कर है लेकिन इसमें शर्त यह है कि मन की माला फेरी जाए।

सुहागिणी श्रृंगार बनाया गुण का गलहार।
प्रेम पिरमल तन लावणां अंतर रत्न विचार।

एक बार मालिक का नाम लो हर रोम की जुबान साथ ही बोल उठे जो निकले वह दिल से निकले; साथ ही आँसुओं की झड़ियां लग जाएं! अगर तूने काबा जाना है तो तरी के रास्ते जा जल्दी पहुँच जाएगा। खुष्क रोजे और इबादतें आँसुओं के बिना फल नहीं ला सकते। लोग आँसुओं के जरिए जल्दी मालिक के वसल को पा लेते हैं।

प्रेम मालिक की सच्ची पूजा है। प्रेम को छोड़कर ज्ञान-ध्यान सब थोथे हैं ये मालिक का भेद पाने से कोरे रह जाते हैं। जब तक किसी को प्रेम का हिस्सा न मिले वह खुदा का भेद पाने से खाली रह जाता है। बरसों की इबादतें किसी को नमाजी या भक्त नहीं बना सकती।

मालिक के मिलाप के कई रास्ते हैं जप तप भक्ति वैराग ज्ञान योग में से सबसे जबरदस्त और ऊँचा मार्ग प्रेम है। **प्रेम** के बिना कोई साधन साधक को भगवान की दरगाह में नहीं पहुँचा सकता।

प्रेम के बिना योग भी एक रोग है। खुष्क साधन जो प्रेम के रंग में रंगे हुए नहीं होते वे सब व्यर्थ होते हैं, साधक को उनसे कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैंः

जप तप संयम हरख सुख मान महतर गरभ।
मूसन निमख प्रेम पर वार वार देयो सरब।

जप-तप, संयम-सुख, मान-बड़ाईयां ये सब एक पल के प्रेम पर कुर्बान हैं। मौलाना रूम साहब फरमाते हैं, ''वह आँख मुबारक है जो अपने प्रीतम की याद में आँसुओं के मोती बिखेर रही है। वह दिल मुबारक है जो प्यारे प्रीतम के बिछोड़े में कबाब हो रहा है क्योंकि हर रोने के बाद खुशी होती है।''

जिस तरह जमीन पर रहमत भरी बारिश होती है तो रंग रंग के फूल और बेलबूटे पैदा हो जाते हैं। इसी तरह जब आँखों से आसूं दिल की जमीन पर बरसते हैं तो मालिक के भेदों के खुलने का मौसम आ जाता है। **प्रेम** का दर्जा इसलिए सबसे ऊँचा है कि मालिक खुद प्रेम है। प्रेम सब साधनों की जान और प्राण है, कोई साधन प्रेम के बिना लाभदायक नहीं हो सकता।

प्रेम एक अधूती सारतत्व है जिसकी तारीफ सब वेद शास्त्र पुराण और धर्मपुस्तके करती हैं। सभी ऋषि मुनि पीर पैगम्बर और पहुँची हुई हस्तियाँ गुरु नानक साहब, कबीर साहब, तुलसी साहब, स्वामी शिवदयाल सिंह जी, शम्स तबरेज इत्यादि प्रेम के पुजारी थे। यह मालिक से सबसे जल्दी मिलने का रास्ता है। प्रेम करके ही प्रभु की प्राप्ति है। गुरु गोविंद सिंह जी फरमाते हैंः

साच कहो सुन लेहो सभे जन, जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो।

मैं आपको सच कहता हूँ आप सब ध्यान देकर सुनें जिन्होंने **प्रेम** किया उन्होंने ही प्रभु को पाया है।

तुलसी साहब भी यही कहते हैं, ''जिन्होंने प्रेम किया उन्होंने ही प्रभु को पाया; प्रेम के बिना आज तक इस रास्ते पर किसी के हाथ कुछ नहीं आया। ठाकुर, ठग और चोर सभी राम को याद करते हैं लेकिन **प्रेम** के बिना मालिक नहीं रीझता।''

प्रेम किया तिन्ही प्रभु पायो बिना प्रेम कुछ हथ न आयो।
राम राम सबको कहे ठग ठाकुर और चोर।
बिना प्रेम रीझे नहीं तुलसी नंद किशोर।

कबीर साहब भी यही फरमाते है, ''योगी जपी-तपी, सन्यासी और सूफी भी प्रेम के बिना धुरधाम-सतगुरु के देश नहीं पहुँचते।''

जोगी जंगम ज्योड़ा सन्यासी दरवेश।
बिना प्रेम पहुँचे नहीं दुर्लभ सतगुरु देश।

प्रेम के बिना जप-तप सब थोथे हैं। ज्ञान ध्यान प्रेम के बिना अधूरे हैं। सब साधन प्रेम को प्राप्त करने के लिए ही किए जाते हैं अगर प्रेम न हो तो सब इबादतें खुष्क हैं। मालिक को मिलने के साधनों में प्रेम सबसे तेज साधन है। प्रेम बहुत जल्दी आत्मा को मालिक के साथ मिलाता है।

शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं, ''अगर रास्ता दूर है तो तू ईश्क के परों से उड़, जब तूं ईश्क के पर खोलेगा तो तुझे सीढ़ी की जरूरत नहीं रहेगी। तू ईश्क पर सवार हो जा रास्ते से डर मत क्योंकि ईश्क के घोड़े की रफ्तार बहुत तेज है; रास्ता चाहे ऊँचा नीचा हो यह तुझे एक पल में मंजिल मकसूद पर पहुँचा देगा।''

प्रेम का दर्जा कर्मियों-धर्मियों से बहुत ऊँचा है। वे जहाँ हजारों सालों में पहुँचे प्रेम की शराब में मस्त हुए लोग आह के मार्ग में पड़ जाते हैं। प्रेम के नशे में चूर लोगों के आत्मिक हुलारों को केवल वही समझ सकते हैं जिन्होंने **प्रेम** का स्वाद चखा है। सच्चे प्रेम में अपनी

जान चुपचाप सब्र के हवाले करनी पड़ती है। सच्चा **प्रेम** अथाह समुद्र है जिसका कोई आर-पार नहीं, यहाँ जान को हवाले किए बिना कोई चारा नहीं।

हाफिज साहब फरमाते हैं, ''तू दर्द के गम में सड़ता रह कोई ईलाज न कर क्योंकि उस दर्द का कोई ईलाज नहीं है। उस प्रीतम का दर्द सब ईलाजों से रहित है। जिस तरह श्वासों के बिना जिंदगी नामुमकिन है इसी तरह प्रेमी का जीवन प्रेम की वजह से कायम है। प्रेमी सदा प्रीतम के प्रेम में मग्न रहता है और भँवरे की तरह चुपचाप प्रीतम की लाट पर अपना आप कुर्बान करता रहता है।''

हाफिज साहब फिर फरमाते हैं, ''जब मुझे **प्रेम** के सुल्तान की तरफ से सिरोपा दिया गया तो समझाया गया कि हाफिज खबरदार! चुप रहना क्योंकि यह कहने कहलवाने का मार्ग नहीं है। यह तो प्रेम में रते जाने और प्रेम रूप हो जाने का मार्ग है।'' आप फरमाते हैं कि तू दिल में सब्र रख क्योंकि प्रेम के रास्ते पर जब तक कोई जान न दे प्रीतम तक नहीं पहुँच सकता। प्रेम रजा और तस्लीम का मार्ग है। जहाँ प्रेम है वहाँ कोई कानून नहीं वहाँ केवल प्रीतम की मर्जी ही सबसे बड़ा कानून है। जो प्रीतम के मिजाज में आ जाए उसके आगे प्रेम करके सिर झुकाया जाता है।

प्रेम की गति में अमीरों की अमीरी नहीं रह सकती। यहाँ तो बंदगी का इकरार करना होता है, चाकरी का दावा बनाना पड़ता है। मान और प्रेम दोनों एक जगह नहीं रह सकते। कबीर जी फरमाते हैं:

चाखे चाहे प्रेम रस राखे चाहे मान।
एक म्यान में दो खड़ग देखा सुना न कान।

ईश्क या **प्रेम** हमें यह बताता है कि किसी को अपनी चतुराई से घायल करने की बजाय प्रेम के बाण से खुद शिकार होना अच्छा है। प्रेम देना जानता है, जिंद जान हवाले करना इसकी खासियत है। प्रेम

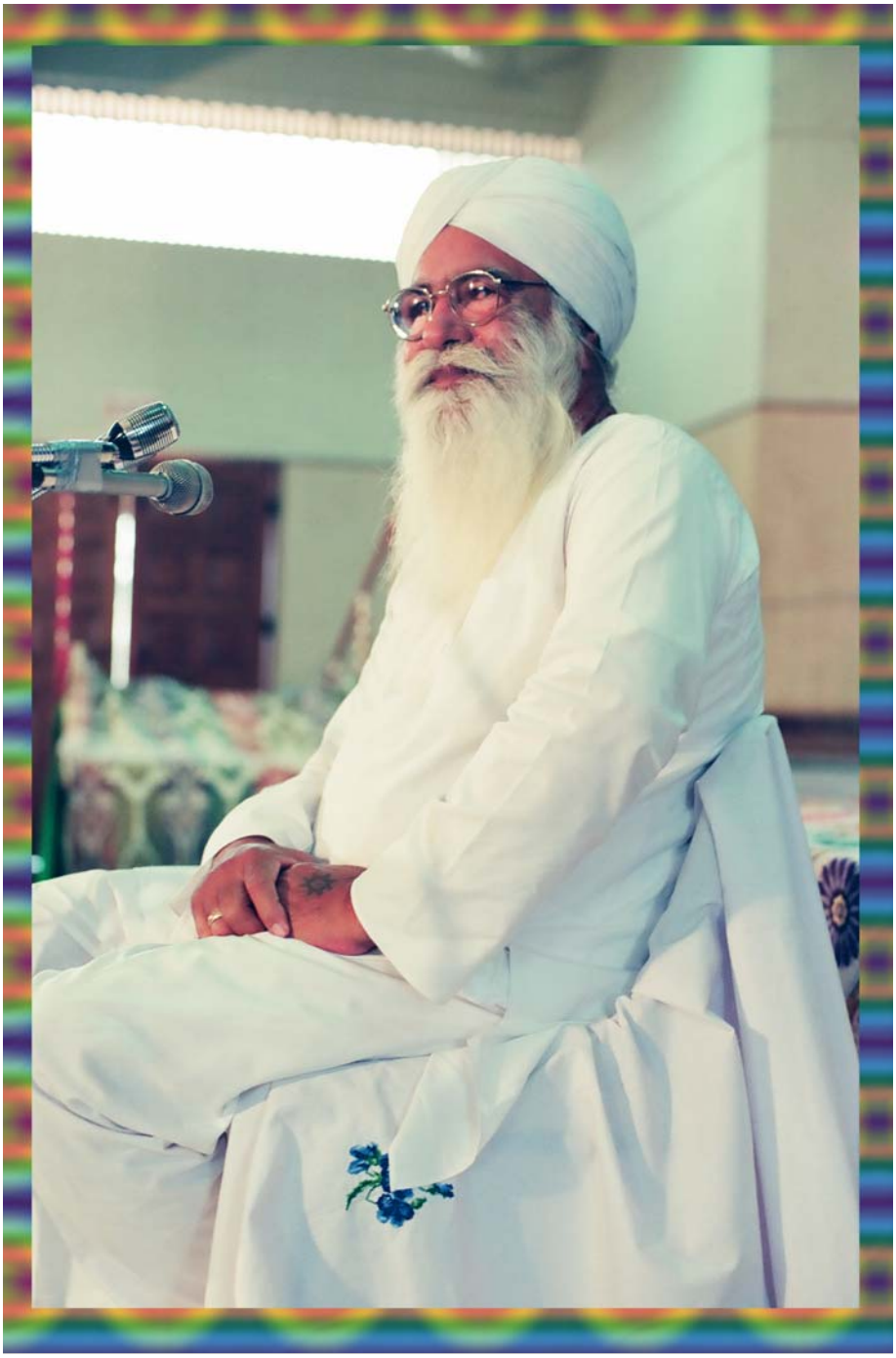

हुक्म में बंध जाने को ही खुशकिस्मती समझता है। सच्चा ईश्क आदमी को दुख-सुख, नेकनामी-बदनामी, गरीबी-अमीरी सबसे बेपरवाह कर देता है, सब हदों से ऊपर ले जाता है।

प्रेम प्रेमी की रग-रग में घर कर लेता है। प्रेम उसके जीवन पर कब्जा कर लेता है। प्रेमी को ताकत, दौलत, इज्जत और मान की हवश नहीं रहती। उसे लोक परलोक की चाह नहीं रह जाती वह स्वर्गों और नर्कों के झमेलों से परे हो जाता है। वह बंधन और मुक्ति की गुझलों में नहीं फँसता।

परमात्मा से दुनिया की चीजें माँगना प्रेम के असूल से हटना है। मालिक की रजा में आए दुखों-सुखों में संतुष्ट न रहना भक्ति की चोटी से गिरना है। प्रेमी को प्रीतम की ही जरूरत है, प्रीतम ही उसके लिए सब कुछ है। उसे जमीन और आसमान में प्रीतम का चमत्कार ही अच्छा लगता है।

वह प्रीतम से प्रीतम को चाहता है। वह हर बात में प्रीतम की रजा चाहता है और उसकी रजा में गरीबी-अमीरी, दुख-सुख, सेहत-बीमारी जो कुछ भी आए उन्हें प्रीतम की दात समझता है। उसे इनमें कोई फर्क दिखाई नहीं देता। वह **प्रेम** के बरकत की वजह से जिस्म और इसके बंधनों से दूर रहता है।

सच्चा प्रेम तो यही है कि उसकी रजा में राजी रहे। प्रेमी उसकी रजा में होने वाले कामों पर खुशी महसूस करता है, उनमे ही अपना भला समझता है किसी तरह भी रजा से उलट नहीं माँगता। उसका एक ही आदर्श है प्रीतम की याद। उसका जीवन प्रीतम की रजा में बीतता है। वह उससे न सुख माँगता है न दुख माँगता है, सदा उसकी रजा चाहता है अगर वह कोई मुसीबत दे तो उसमें प्रीतम की रजा की मिठास पाकर मुसीबत की सख्ती को भूल जाता है।

शेष अगले अंक में.....